वा०मू०
६-००

गति

शुभ संकल्प,

मा,

प्रेम,

म कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सह सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध अ रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अ लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबाबी कार्ड आना चाहिये वी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—००

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ।।

मनुष्य बनो

वर्ष २९ | आश्विन सं० २०३६ वि० सितम्बर, १९७९ | संख्या १२

साधु की महिमा

आप तरें औरों को तारें, यह साधू की महिमा ।
इनका पर उपकार है भारी, किससे कोई दे उपमा ।।
कोई बाहर कोई भीतर देखे, लीला अगम अनूपा ।
बाहर भीतर एक समाना, एक विचित्र स्वरूपा ।।
राधा सूरत शब्द कन्हाई, दोनों का भया मेला ।
बंशी बाजी जब मधुवन में, मेटा द्वन्द झमेला ।।
ब्रह्म सनातन रूप कृष्ण का, समझे कोई नर ज्ञानी ।
भँवर गुफा चढ़ सुने बांसुरी, परखे शब्द निशानी ।।
राह रुकाना गुरु से पूछो, आगे अगम अगोचर ।
राधास्वामी चरण शरन बलिहारी, सत पद पहुँचो धुर घर ।

मौज मालिक !

मौज मालिक !!

शुभ समाचार

दयाल मानवता प्रचारक सभा (रजि०) राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

२८ वाँ वार्षिक दशहरा मानवता सन्त सम्मेलन

सन्त समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोय,
सुत दारा और लक्ष्मी पापी के भी होय।

मानवता सन्त सम्मेलन दशहरा के शुभ अवसर पर सलवान पब्लिक स्कूल, राजेन्द्रनगर (ओल्ड) नई दिल्ली में दिनांक ३० सितम्बर व १ अक्टूबर १९७९ को परम सन्त हजूर पीरेमुंगा जी महाराज की अध्यक्षता में होगा। इस शुभ अवसर पर हिज होलिनैस परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज (होशियारपुर वाले) अपने ९४ साल के जीवन अनुभव सत्यता तथा तपस्या के आधार पर बड़े सरल रूप में आपको बतायेंगे कि किस प्रकार गृहस्थ में रहते हुए सच्चे मानव बनकर संसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए शान्ति, आनन्द, निश्चिन्त और मालिक की मौज में रहकर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। इनके अतिरिक्त सन्त दयालानन्द (आनन्दराव) जी महाराज (आँध्र प्रदेश) सन्त ताराचन्द जी महाराज (हरियाणा), सन्त दर्शन सिंह जी महाराज (दिल्ली), श्री पी० एन० पंडित जी (काश्मीर), तथा श्री आनन्द दयाल जी (नई दिल्ली) से पधार रहे हैं। इनके अतिरिक्त अन्य महाअनुभवी पुरुष अपने विचार आपके सन्मुख रखेंगे। सत्यता के जिज्ञासू ठीक समय पर पधार कर इस अनमोल और शुभ अवसर का लाभ उठायें। (यह सत्संग है मेला नहीं)।

प्रोग्राम

३० सितम्बर, १९७९ (रविवार) प्रातः ९ से ११ बजे तक
सायं ३ से ५ वजे तक
१ अक्टूबर, १९७९ (सोमवार) प्रातः ९ से १२ बजे तक

नोट :—(१) लंगर तथा ठहरने का प्रबन्ध दिल्ली से बाहर के आने

बाले प्रेमी भाइयों के लिये पहले की भांति सभा की ओर से होगा। यह प्रबन्ध केवल ३० सितम्बर (प्रातः व सायं) और २ अक्टूबर केवल प्रातः के लिये होगा। कृपया अपने बिस्तर अपने साथ अवश्य लायें।

(२) दिल्ली के बाहर से आने वाले भाई २९–९–७९ को प्रातः किसी भी समय सलवान स्कूल में जाकर ठहर सकते हैं।

निवेदक तथा दर्शनाभिलाषी :

नन्दलाल सचदेव—आनरेरी जनरल सैक्रेटरी

दयाल मानवता प्रचारक सभा (रजि०) (दुकान नं० १०६ के पीछे)

शंकर रोड मार्किट, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–६०

—०—

धन्यवाद

(१) १०) रु० अमरचन्द भाटिया, विश्राम घट, नगर कोहाली वाया चोगावाँ जिला अमृतसर (पंजाब) ने 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ भेजें हैं।

(२) ८) रु० डी० के० गोविल, असिस्टेन्ट इन्जीनियर, 71, R.C.C. G.R.E.F. C/o 99, A.P O. ने 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ भेजे हैं।

(३) १४) रु० के० एम० हुले, तेक चाल, काला तालाब, कल्याण, जिला थाना (महाराष्ट्र) ने 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ भेजे हैं। 'मनुष्य बनो' परिवार आपके इस कार्य का आभारी है।

निवेदन

प्रिय ग्राहक भाइयो, राधास्वामी।

इस अंक के साथ 'मनुष्य बनो' का २९ वाँ वर्ष समाप्त हो रहा है। लेकिन बार २ बिनती करने पर भी हमारे बहुत से ग्राहक भाइयो ने इसका वार्षिक शुल्क नहीं भेजा जिसकी बजह से मनुष्य बनो को १२०० रु० आर्थिक हानि उठानी पड़ी है। अतः उन सभी बन्धुओं से जिन्होंने अपना चन्दा अभी तक नहीं भेजा है। शीघ्र भेजने की कृपा करें। ताकि हम इस राशि की पूर्ति

कर सकें व आप लोगों की निरन्तर सेवा कर सकें । इसके लिए आप सभी का सहयोग अति आवश्यक है । धन्यवाद —प्रकाशक

सूचना

बढ़ती हुई कागज की मँहगाई छपाई के कारण हमें पुस्तका का मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है । अतः ग्राहक भाइयों से निवेदन है कि वे अब आगे का चन्दा ७) रु० के हिसाब से भेजने का कष्ट करें ।

—०—

शोक समाचार

सतसंगी भाइयों को सूचित करते हुये अत्यन्त खेद होता है कि दिल्ली सभा के अत्यन्त शुभ चिन्तक श्री टी० आर० थापर रेलवे बोर्ड में कार्यरत का दि० २६-८-७९ को हृदयगति रुक जाने के कारण देहान्त हो गया है । आपका दिल्ली की सभा के साथ विशेष प्रेम था तथा महाराज जी तथा अन्य सत-संगियों की सीट रिजर्व कराने में विशेष सहयोग रहता था । उनके आकस्मिक निधन से सभा को अपार क्षति हुई है । मालिक से प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा शोक संतिप्त परिवार को इस दुखद घड़ी में इस क्षति को बहन की क्षमता प्रदान करें ।

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनाँक १७-७-७७

राधास्वामी। कोई शक्ति है जिसने सारा संसार बनाया है। उसका बचपन से विचार मिला था। हर एक धर्म, पंथ और विचार वालों ने उसके बारे में अलग-अलग विचार प्रकट किये हैं। मैं उस राम को मिलने की तलाश में दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलालजी महाराज के चरणों में गया था जैसे मैं साधारण कहा करता हूँ। क्योंकि सतमत एक नई चीज थी जिसमें सबका खण्डन था। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो कुछ मिलेगा वह बता जाऊँगा। दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। अब मैं बूढ़ा होगया हूँ। मैं जानता हूँ कि मैंने यहा से चले जाना है और आपने भी चले जाना है। कहाँ जाना है, कहाँ से आया हूं और मेरा क्या परिणाम होगा, मैंने इस खब्त में सारा जीवन व्यतीत कर दिया। जो कुछ मैंने समझा अपने कर्मभोग वश कहता रहता हूँ।

देखो मैं किसी बात का दावा नहीं करता। मेरा जीवन सचाई की खोज में व्यतीत होगया। जो सचाई मैंने प्राप्त की, पता नहीं वह ठीक है या गलत है। मेरे जिम्मे एक कर्तव्य था। दाता दयाल ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। बाबा सावनसिंहजी ने कहा था निर्भय होकर काम कर जाना मैं तुम्हारी रक्षक रहूँगा। मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है मगर मेरी नीयत साफ है। कबीर साहिब का शब्द है—

चलना है दूर मुसाफिर काहे सोवैरे।
चेत अचेत नर सोय बावरे, बहुत नींद मत सोवैरे।
काम, क्रोध, लोभ में फँसिगे, हो हुसियार उमरि काहे सोवैरे,

सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवैरे।
सो गठरी तेरी बीच में छिनि गई, मूढ़ पकरि कहा रोवैरे।
रस्ता तो बहुदूर विकट है, तजि चलन अकेला होवैरे॥
संग साथ तेरे कोई न चलेगा, डगरिया काके जावैरे।
नदिया गहरी नाव पुरानी, केहि विधि पार तू होवैरे॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ब्याज के धोखे मूल खोवैरे।

मैं जानता हूँ कि मैंने चले जाना है। बाप, माँ, स्त्री, लड़का और लड़की सब चले गये। संसार जाता रहता है। कोई कुछ और कोई कुछ कहता है। कहाँ जाना है ? मैं वह आदमी हूँ। किसी की बात पर विश्वास नहीं करता। मैं सोचता हूं कि सचमुच हमने दूर जाना है। अगर दूर जाना है तो कहां जाना है। पहला प्रश्न यह है कि हम कौन हैं कहाँ से आये हैं और कहां जाना है ? मैंने इस खोज में आयु व्यतीत कर दी। हम कहाँ से आये हैं दया तो दाता दयाल की है मगर इसका पता लोगों से लगा। प्रत्यक्ष रूप से देखो, तुम कहाँ से आये हो ? हम सब माँ के पेट से आये हैं। हम और तुम माँ के पेट में एक न दिखाई देने वाले कीड़े ने जिसको सुपर मैटोरिया कीड़ा कहते हैं। अगर कोई जानना चाहे कि मैं कहां से आया हूँ तो जब तक वह आदमी उस अवस्था में न चला जाये जिस अवस्था में वह Sperm cell germ वीर्य में था वह नहीं जान सकता।

इसलिए संतों ने यह साधन दिया हुआ है कि निर्विकल्प समाधि से आगे जाओ। जब हम उस वीर्य के कीड़े में थे तो हम कौन थे ? उस समय हमारी कर्म इन्द्रियों और ज्ञान इन्द्रियें Function नहीं करती थी लेकिन कारण रूप से मौजूद थीं जिस प्रकार बड़ के बीज में सारा वृक्ष होता है। वह बीज रूप बाप के अन्तर कहाँ से आया ? वह अन्न से आया जो बाप ने खाई। जब तक सूर्य की किरणें नहीं आती तब तक अन्न पैदा नहीं होती। असली तौर पर

हम कह सकते हैं कि हम प्रकाश से आये हैं। यही बात बाबा सावनसिंह जी या हजूर साहिब कहते थे कि दसवें द्वार से आगे जाओ तब सत्गुरु मिलता है। मगर मैं इससे भी आगे कुछ और कहना चाहता हूँ। वह कैसे ?

जब मैंने तुम लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है और मैं नहीं होता। यह मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ इसमें कोई झूठ नहीं मैं शायद काम न करता क्योंकि दाता दयालजी ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। इस वास्ते यह काम करता हूं। इस समय जो वर्तमान गुरु वाद है यह सारे का सारा ठगवाद है। हमें कोई सच्ची बात नहीं बताता और अन्धेरे में रख कर लूटा जा रहा है। मैं स्वयं चकित हूं। मैं अब बाहर हमीरपुर दौरे से आया हूँ। वहाँ एक जज को परमार्थ का शौक है। उनका सारा घराना राधास्वामियों का है मगर वह राधास्वामी नहीं हुआ। उसने कहा मुझे इन पर विश्वास नहीं। उसने बताया कुछ महीने पहले मैं उसके अन्तर प्रकट हुआ और मैंने उसे कहा कि भई तू गुरु की तलाश बाहर न कर, गुरु तुझे घर पर मिल जायेगा। उसके बाद उसने मेरे बुलाने का सारा प्रबन्ध किया। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचन्द ! तू ने मर जाना है। क्या तू उसके अन्तर गया था ? मैं नहीं गया। मैं यह काम दर्ददिल से करता हूँ। मेरे जिम्मे एक कर्तव्य है। मैं स्वयं ही भ्रम में था। हम सब लोग मन के चक्कर में आकर लुटे जारहे हैं। एक घटना सुनो। नन्दलाल जो दिल्ली में मानवता प्रचारक सभा के सैकटरी हैं, छुट्टी लेकर हरिद्वार भाग गया। क्यों ? उसके अन्तर कोई सफेद दाढ़ी वाला महात्मा प्रगट हुआ। उसने कहा तू अपना जन्म बना। वह घबरा गया। उसने छुट्टी लेली। दो हजार रुपया हमें भेज दिया और कुछ आनन्दराव जी को दे दिया। बाकी भाई के बच्चों को देकर स्वयं जंगल में चला गया।

आप लोग आते हैं, मेरे दुढ़ापे पर दया करके मेरी बात को सम-

झने का यत्न किया करो। वह सफेद दाढ़ी वाला महात्मा कौन था ? जिस प्रकार मैं उस जज के अन्तर नहीं गया इसी प्रकार कोई बाहर से नहीं आता, न कोई गुरु न अवतार। जिस प्रकार का संस्कार मानव के मन के अन्तर होता है वह फुरता है। इस एक भ्रम में आकर भारतवर्ष अनेक धर्मों में बट गया है और हम लोग लुट गये हैं।

क्या बात थी ? वह कर्मयोगी है। जब वह लाहौर में था तो मैंने उसे कहा था कि तू कर्मयोगी है। और यह काम करेगा उसकी बूढ़ी माँ थी। मैंने कहा मां की सेवा करना। उसने माँ की सेवा की। अब वह नौ महीने के बाद रिटायर होने वाला है। क्योंकि किताबों में दर्जा के बारे में लिखा है कि सहसदल कँवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न में यह होता है। वहाँ घन्टा संख आदि बजते हैं। क्योंकि उसके सारे दर्जे नहीं खुले थे और उसे भ्रम था कि मेरा जन्म अकार्थ चला गया। उस विचार ने उसके अन्तर उस महात्मा का रूप धारण किया और उसके अपने ही विचार ने उसे चिताया। उसने अपना सारा धन बाँट दिया। मैंने उसे लिखा कि जब तेरे अन्तर रूप प्रकट हुआ था तो मुझे तो पूछ लेना था। मैं मन के चक्कर से निकालने के लिए छत्तीस साल से काम कर रहा हूं। संसार मन के चक्कर में आया हुआ है ये जितने रूप प्रकट होते है, कोई बाहर से नहीं आता। यह मेरा अनुभव और Realization है। कोई आदमी भी हमें सच्ची बात नहीं बताता। दाता ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। इसलिये कहता हूँ कि जिस प्रकार का विचार और संस्कार मानव के मस्तिष्क के अन्तर है, कुछ पिछले जन्मों और कुछ पिछले जन्मों और कुछ इस जन्म का, उसके अनुसार दृश्य दिखाई देता है। वही उसके अन्तर प्रकट होता है। १९०५ में मुझे क्यों दृश्य आया था ? क्योंकि मैं रामायण के पढ़ने से मानता था कि वह राम मानव चोले में आता है। वह विचार मुझे वहाँ

लेगया जहाँ मेरा काम बनना था और मुझसे कितना खेल खिलाया।

हमने दूर कहाँ जाना है ? जब तक हम मन से परे नहीं जाते तब तक हम अपने घर नहीं जा सकते। वह दूर क्या हुआ और हम कहाँ से आये हैं ?Spermatorom (शुक्राणु) से परे प्रकाश है और प्रकाश से परे शब्द है। जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह हमारा आद और जात है। हमने वहाँ जाना है। इस संसार में हमारा शरीर बाहर के Vitamins और Minerals से बनता है हमारा शरीर उस खुराक से बनता है जो माँ बाप खाते हैं। जो इसके अन्तर प्रकाश है वह पारब्रह्म परमात्मा से आया हुआ है। प्रकाश स्वयं क्या है ? यह आकाश से निकलता है। प्रकाश से परे आकाश है। आकाश का गुण शब्द है। जो चोज शब्द को सुनती है वह हमारा आद है। हमने वहाँ जाना है। कबीर का क्या भाव है, मैं नहीं जानता। मैं कहाँ से आया हूं। मैं वहाँ आया हूं वह हूँ।

इसका अनुभव मुझे तुम लोगों से हुआ। जब मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता न ही मुझे पता होता है तो सिद्ध होगया कि मेरे अन्तर जो कुछ प्रकट होता है वह सब माया और कल्पित है। आगे शब्द और प्रकाश है प्रकाश और शब्द में रहता हुआ उस चीज की तलाश करती है जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। उसका अन्त नहीं मिलता मेरी वह अवस्था मेरा आद घर है। हम सबने वहाँ जाना है। वह हमारा आद घर है। हमने इस संसार को सत माना हुआ है। स्वामी जी कहते हैं—

तुमने तो जगत को सत कर माना।
कैसे पाओ नाम निशांना ॥

तुम लाख फकीरचन्द के पाँव चाटते रहो, मन्दिर बनाते रहो, और फकीरचन्द को कपड़े पहनाते रहो जब तक तुम स्वयं अमल

नहीं करोगे तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता। तुम यह बिलकुल भूल जाओ संसार वालों ने नहीं समझा है। हम वाणी जाल में फँसे हुए हैं। एक वाणी आती है।

पहले पाप कमाय कर, बिष को बधी लोट
सकल पाप छिन में कटें, जब आवे गुरु ओट

संसारवालों ने यही समझा हुआ है कि गुरु से नाम लेलो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। यह बात नहीं है। गुरु ज्ञान और विवेक का नाम है। जब Realization हो जाती है तब पाप कटते हैं। किसी गुरु के पाँव धोने, पास बैठने, उसकी खुशामद करने और उसका डंका पीटने से तुम्हारे पा। नहीं कटेंगे। यह धोखा और फरेब है मैंने इसे देखा है। मेरा मस्तिष्क हिल गया इसलिये मैं यह काम करता हूँ। ऐ मानव ! तुमने दूर जाना है। तू दूर हो आया है। यह तेरा देश नहीं है। यही दाता ने मुझे कहा था—

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बेगाना।
यहाँ सब बेगाने बसें, कोई नहीं यगाना।
गुरु ने तुझे उपदेश दिया और चिताया।
सन्त पंथ धार हिये, कटे मोह माया।

मेरी मोह माया नहीं कटती थी। उसे कटाने के लिए यह काम दिया था। जब मैंने आप लोगों से सुना था कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है मेरी बुद्धि चक्कर खागई। अ। मैं हमीरपुर गया था वहाँ एक और घटना घटी। बखतावरसिंह का लड़का थोड़ी खराबी करता था जिसके कारण बखतावरसिंह दुखी था। जब यहाँ सत्संग मैं आया था तो मैंने समझाया था। अब जब मैं वहाँ गया तो वह कहता है कि बाबाजी ! आप स्वप्न में आकर मुझे बहुत क्रोध में कहा कि अगर तुमने गलती या बदमाशी की तो तुम्हें मैं जला दूँगा। अब आप सोचें कि मैं अपनी आत्मा से पूछने के लिए विवश नहीं हूं कि क्या तू गया था ? मैं बिलकुल नहीं गया। अगर यह

क ये महात्मा लोग भी नहीं जाते और हमें सच्ची बात नहीं ये अपने सिर पर कितना भार ले रहे हैं। आप लोग तो वश्वास करने से तर जाओगे मगर ये डूब जायेंगे। ये तर े। क्योंकि यह धोखा, फरेब और चारसौ बीस है।

वहाँ जाना है। मैं सोचता हूँ कि आप लोग आजाते हैं को घर जाने की आवश्यकता है ? आप लोगों को तो हिये, स्वास्थ्य और मान प्रतिष्ठा चाहिये। ११,१ प्रतिशत इस खब्त के हैं। इसलिए यह संतमत सर्वसाधारण के । फिर ऊँची बात कहने का क्या लाभ है ? यह लाभ है लिखे आदमियों को पता लग जाये कि हकीकत क्या है म हमारा धार्मिक रागद्वेष समाप्त या दूर हो जाये। ीछे न लड़ें। इसलिये मैंने इस भेद को खोला है। अगर े न खोलता तो जितनी इच्छा चाहे रुपया कमा लेता। ा विशेष विशेष रूहों के लिए है जिन्होंने अपने घर जानते हैं कि हमने चले जाना है मगर हमें विचार मने एक दिन इस संसार को छोड़ जाता है। कोई ा हैं।

क कोटन में कोउ, नारायण जिन चेत

हते हैं —

नर सोच बावरे, बहुत नींद मत सोवेरे।

गफलत न करना है। यह सत्संग उनके लिए है बूढ़े भी नहीं चाहते। वे चाहते हैं कि हमारे पुत्र उनका विवाह करें। यह संसार ऐसा ही है। मैं हूँ कि मैंने यह काम क्यों किया ? मुझे कोई पता रहा हूँ। एक संस्कार मिला था। मुझे स्वयं

पया था, जहां मेजर बृजलाक्षं मिला जो

बात नहीं बताता। सब लोगों को पागल बनाया हुआ है। मैंने यह काम क्यों किया? केवल इस विचार से कि एक तो गुरु ऋण था दूसरे इन धर्मों, पंथों, महात्माओं और गुरुओं ने अपने निजी स्वार्थ मान प्रतिष्ठा और धन के लिये हम गृहस्थियों को मूर्ख बना कर लूटा है और लुट रहे हैं। यही बात मैं हिमाँचल प्रदेश में कई सत्संगों में कह कर आया हूँ। मैंने वहाँ कहा है तुम लोग पहाड़ी भोले भाले हो। तुम्हें देवी देवताओं के स्थानों वाले और हम महात्मा लोग लूटते हैं। तुम्हें और समझ नहीं। मेरे काम करने का क्या भाव है? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं केवल यह कि ऐ मानव इस मन के चक्कर में आकर मूर्ख मत बन।

मन के मते न चालिए, मन के मते अनेक
जो मन पर असवार है सो साधू कोई एक

इस प्रकार सारा संसार मन के चक्कर में आकर लूटा जा रहा है। उन्हें बुद्धि नहीं। वे मन के चक्कर में आकर कई प्रकार की गलतियाँ कर रहे हैं। इसीलिए कबीर साहिब कहते हैं कि ऐ मानव तू ने दूर जाना है, तू चेत।

मैंने यह काम केवल इस विचार से किया कि मानव जाति मन के चक्कर में बुरी तरह आई हुई है। तुम लोग तो क्या बे बड़े बड़े साधु महात्मा जी नहीं बचे पुरुषोत्तमदास! मैं ब्राह्मण के घर पैदा हुआ था। जब राधास्वामी मत की वाणियाँ सुना करता था कि राम, कृष्ण, पाराशर, वशिष्ट भूल गये, मुहम्मद और बुद्ध भी नहीं पहुंचा तो मैं अन्दर बैठ कर रोया करता था और प्राथना किया करता था कि दाता! मैं तो तुझे मिलने के लिए निकला था तू ने कहाँ फँसा दिया। मुझे इसका भेद दे और विश्वास करादे। उस समय उन्होंने कहा था कि तुझे सच्चे सत्गुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। तू सत्संगियों के रूप में होंगे। तू सत्संग कराया कर।

अब आप मेरे सच्चे सत्गुरु सिद्ध हुये। जब मुझे यह पता लगा

कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है और मैं नहीं होता तो मेरी आँख खुल गई। क्या किसी महात्मा ने आज दिन तक इतने स्पष्ट वर्णन से काम किया है ? कहने को तो बाबा सावनसिंहजी भी कहा करते थे कि मैं नहीं गया मगर साथ ही अज्ञानी जीव यह समझते हैं कि सब अपने आपको प्रकट नहीं करते बल्कि छुपाते हैं। इसलिए मेजर बृजलाल को विश्वास नहीं आया यद्यपि बाबा सावनसिंह जी ने आरम्भ मैं कहा था कि मैं नहीं गया। जो बृजलालजी के साथ हुआ ऐसा हो सकता है क्योंकि तुम्हारे मन मैं बड़ी शक्ति है। लोग मुझे बुला कर परचा करा लेते हैं। एक उदाहरण सुनो। मध्यप्रदेश में एक लड़का परीक्षा देने गया। उसे विज्ञान का परचा नहीं आता था। उसने मुझे याद किया। मेरा रूप प्रकट हुआ और डेक्स के नीचे बैठ गया और पर्चा हल करा दिया। जिसमें १०० में से ९८ नं० आये लेकिन मुझे कोई पता नहीं।

मैं अपने आपको पूछता हूं कि ओ बूढ़े ! तू ने क्या विपत्ति सिर पर लेली। यह मेरा कर्म भोग है। मैं यह कहना चाहता हूं कि ऐ मानव ! तेरे मन में बड़ी शक्ति है। तेरे अपने ही अन्तर सारा संसार बसता है। राम, कृष्ण, गुरु, चेला सब कुछ तेरे अन्तर है। तुम अपने आपको भूल कर संसार की गलत इच्छाओं और आसाओं में फँसकर बरबाद (नष्ट) होगये। हम वहां कैसे पहुंचे ?

सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवे रे।

इसका क्या भाव है ? जब तुम मरने लगोगे तो अगर तुम्हें जीवन में गुरुज्ञान नहीं मिला हुआ है तो तुम्हारा संसार में (Attachmentमोह रहेगा। जब तक संसार सेAttachment है अर्थात स्थूल प्रकृति से मोह है तो तुम अपने घर नहीं जा सकते। क्यों ? क्योंकि तुम्हारे सिर पर माया मोह की गठरी का बोझ रहेगा अपने घर जाने से पहले वह बोझ उतरना चाहिये। इसके प्रमाण में विज्ञान कहता है कि मरते समय मानव को डाक्टरों ने Sensative

Scale पर रखा। जब उसके प्राण निकल गये तो कोई पचास कोई वीस और कोई दस ग्राम घटा। उसकी फोटो Screen पर देखी गई। वह भारी क्यों हुआ ? क्योंकि उसके मन में मोह माया की गठरी थी। किससे मोह था ? उसे पुत्र, बाप, गुरु की देह या किसी डेरे मन्दिर से मोह था। जब तक तुम्हारा मोह किसी भी स्थूल चीज से है तो जब तुम्हारी जान निकलेगी तुम्हें जमीन की कशिश ऊपर नहीं जाने देगी चाहे तुमने लाख मन्दिर बनवाये हुए हैं, और लाख दान और नेकी की हुई है। क्योंकि तुम्हारा शरीर मोह के कारण भारी होगा इसलिए भूल जाओ कि कोई गुरु या शक्ति तुम्हें इस शरीर के चक्कर से निकलने देगी। क्योंकि जमीन की कशिश तुम्हारे शरीर के स्थूल भारी होने के कारण वह इसे खींचेगी और ऊपर नहीं जाने देगी। मेजर वकशीशसिंह ! समझते हो न मेजरी तेरे साथ जायेगी और न किसी पुत्र या लड़की ने साथ जाना है। एक दिन कूंच नगारा बज जायगा। आप सत्संग में आते हो, कुछ मुझसे लेजाओ, विशेषकर बूढ़े आदमी। मुझे विज्ञान से विश्वास होगया। कबीर साहिब ने भी यही कहा है कि सिर पर माया मोह की गठरी। अगर अपने घर जाना चाहते हो और इस चक्कर से बचना चाहते हो। मैं अपने आपको समझता हूं, फकीर-चन्द होश कर, तू मन्दिर बनाकर गुरु बन गया है, कहाँ जायगा ? यह मोह Attachment मरने से पहले छोड़ना पड़ेगा। अगर नहीं छोड़ोगे तो तुम्हारा शरीर भारी होगा और स्थूल पदार्थ का बोझ होने कारण जमीन की Gravaity या जमीन की कशिश तुम्हें बाहर कैसे जाने देगी। असम्भव है, विज्ञान को कहां लेंजाओगे २×२=४ यह कहना चाहता हूं।

ऐ मानव ! अगर तू इस संसार के चक्कर से बचना चाहता है तो भूल जाना कि तू बाबे फकीर या किसी का कोई मन्दिर बना देगा, वहाँ लाखों रुपये का खर्च करेगा या किसी के पांव चाटने से

तेरा आवागवन समाप्त हो जायेगा। नहीं बच सकता। नहीं बच सकता! और नहीं बच सकता। जब तक तुम्हारे दिल से स्थूल पदार्थ का मोह समाप्त नहीं होगा। स्थूल पदार्थ में माँ, बाप, बेटा बेटी, स्त्री, भाई, गुरु का देह और मन्दिर, राम की शक्ल अयोध्या, मुहम्मद साहिब, गफा शरीफ कोई भी हो, जब तक इनके साथ प्रेम है कोई भी आदमी अपने घर नहीं जा सकता। अगर मैं गलत हूँ तो वर्तमान गुरुओं महात्माओं को अधिकार देता हूँ कि मेरे विरुद्ध आवाज देजायें। मुझे कोई दावा नहीं। मैंने सचाई की खोज में आयु व्यतीत करदी और यही बात विज्ञान ने सिद्ध की है और यही बात सावनसिंहजी महाराज कह गये कि जिनको हरिद्वार से प्रेम है वे हरिद्वार की मछलियाँ बनेंगे। तो क्या जिन्हें व्यास से प्रेम है वे व्यास मछलियाँ नहीं बनेंगे? जिन्हें होशियारपुर से प्रेम है क्या वे होशियारपुर की मछलियां नहीं बनेंगे? सिद्धाँत तो एक ही है। राय सालिगराम साहिब जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है वह अपनी प्रेम वाणी में साफ लिख गये कि अन्त समय फिल्म चलती है। जिस गुरु से नाम लिया हुआ है वह भी आजाता है और तुम्हें शब्द भी सुना देता है। कुछ समय तुम्हारा सूक्ष्म शरीर ऊपर घूमता रहेगा। फिर जब कोई सन्त सत्गुरु संसार में आयेगा तब तुम्हें चोला मिलेगा और उसके सम्पर्क में बाकी कमाई पूरी करोगे।

अगर आज मुझे राधास्वामी मत की शिक्षा में दोष दिखाई देता है तो मैं इसके विरुद्ध आवाज दे जाता चाहे मैं नर्क में जाता। कई आदमी कहते हैं कि तू व्यास वालों के विरुद्ध नहीं कहता। बल्कि संतमत की सचाई को प्रकट कर रहा हूँ। जिस उसूल के आधार पर सन्तों ने मेरे पूर्वजो सगर, वशिष्ट, राम, कृष्ण अर्थात सब का खण्डन किया उसी उसूल के अनुसार मैं इस मौजूदा गुरुवाद का खण्डन किये जाता हूँ। हमें कोई सच्ची बात नहीं बताता और हम गृहस्थियों को धोखे में रखा हुआ है। सच पूछते हो तो इनका भी

कोई दोष नहीं क्योंकि तुम्हें सच्ची बात सुनने और समझने की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास कितने आदमी आते हैं। क्या ये सच्चाई सुनने के लिए आते हैं ? कोई कहता है मुझे चक्कर आते हैं, कोई कहता है मेरे बेटा नहीं है और कोई कुछ कहता है। अरे ! जो कुछ तुम्हें मिलता है तुम्हारे किये हुये का फल मिलता है। मुझे तो पिछले जन्म का यश मिलना था, जो मुफ्त का मिल गया। लोग प्रशाद ले जाते हैं। उनके बच्चे हो जाते हैं। मेरी लड़की के विवाह किये हुये चौबीस साल होगये। मैंने उसे कई बार प्रशाद दिया लेकिन उसके बच्चा नहीं हुआ। क्या मैं बच्चा देता हूँ। लोग प्रशाद ले जाते हैं और स्वस्थ हो जाते हैं। जब मैं बीमार होता हूँ तो डाक्टरों के पास दौड़ता है। मैं सच्ची बात कहता हूँ लेकिन तुम लोग सच्ची बात सुनने के लिए तैयार नहीं। तुम्हें जो कुछ मिला, मिल रहा है, यह तुम्हारे कर्मों का फल है। जो पिछले जन्म में दिया हुआ है वह मिलता है। हमने दिया हुआ है हमें मिलता है। जो तुम करोगे या बोओगे वह मिलेगा मैंने इस विचार को लेकर काम किया है कि तुम न लुटो न, क्योंकि धर्म पंथ वाले बड़े चालाक होते है। कबीर साहिब कहते हैं—

यह कलि गुरु बड़े प्रपंची डार ठगौर सब जग मारा।
कहें कबीर तेहि हंस न बिसारो जा में मिला छुड़ावन हारा।

उन्होंने झूठ नहीं कहा। तुमने लाखों सत्संग सुने होंगे। कोई गुरु हमें सच्ची बात नही बताता। ऐसा ऐसा प्रोपेगन्डा करते हैं कि जिसका कोई हदहिसाब नहीं। पूछो नहीं। ये गुरु लोग तुम्हें ऐसी ऐसी बातें बताकर अपने जाल में फँसाते और अपना जानवर बनाते हैं कि सारी आयु आते रहो, मत्था टेकते रहो और अपनी कमाई का दसवाँ भाग देते रहो। मेरी तो आँखें खुल गईं मैं क्या समझता था और क्या निकला ? बीमारी कुछ है इलाज कुछ बताते हैं। मैंने यह काम क्यों किया ? मैंने यह काम दर्दे दिल अर्थात दिल

से किया है। मेरे पास नौजवान बच्चे आते हैं। मैं उन्हें अपना चरित्र अर्थात मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखने का उपदेश करता हूं। दूसरी जगहों पर उन्हें नाम जपने के लिए कहा जाता है मैं उन्हें पूछता हूँ कि तुम्हारी अशान्ति का क्या कारण है बच्चो ! बताओ तुमने वीर्य तो नहीं खोया ? तुम्हारा ब्रह्मचर्य तो नहीं गिरा हुआ ? जिनके ब्रह्मचर्य गिरे हुए होते हैं उन्हें असली बीमारी तो वह है। अगर उन्हें अपने के लिए नाम दे दो तो पागल होजायेंगे। एक आदमी बहुत विषयी है अगर तुम उसे नाम जपने को कहेंगे और विषय विकार को रोकने की शिक्षा नहीं देंगे तो जब उसकी सुरत अन्तर जायगी तो वह पागल हो जायेगा। मैंने ऐसे कई देखे हैं। यह क्या है ? मैंने इस दशा को देखकर यह काम किया है शायद प्रकृति ने उसी उद्देश्य के लिए मुझे पैदा किया हो और मेरे मस्तिष्क को हिलाया हो। मैं संसार को सच्चाई बताना चाहता हूँ कि ऐ मानव ! अगर इस संसार में तेरा कोई सहायक है तो तेरा अपना ही मन सहायक है। जैसा तू खियाल करेगा वैसा तेरा वैसा हाल होगा जैसी मति वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी। अपनी नीयत और विचार को ठीक रख कर संसार में रहे। 'शिव संकल्प अस्तु के के विचार और आशावादी होकर जीवन व्यतीत कर। अगर सदा के लिए इस चक्कर से बाहर निकलना चाहता हो तो मन को छोड़ना पड़ेगा वरना कोई शक्ति तुम्हें नहीं निकाल सकती। इस मन मण्डल में जन्म न लेने के लिए क्या करना चाहिए ? मरने से पहले मन का सम्बन्ध किसी भी स्थूल वस्तु, पुत्र, माँ, स्त्री सम्पत्ति, मकान, गुरु की देह और आश्रम राम जो अयाध्या में पैदा हुआ, अयोध्या, गोकल या मक्का से नहीं रखना चाहिये। जब तक विज्ञान बाबा सावनसिंह और हुजूर महाराज राय सालिगराम साहिब के अनुसार तुम्हारा उनके साथ मोह रहेगा तुम बाहर नहीं जा सकते।

अब शास्त्रों का हाल सुनो। शास्त्र कहते हैं बत्तीस साल तक ब्रह्मचर्य रखो। तुम सब हिन्दू कहलाते हैं। कहते हैं हम ब्राह्मण और हिन्दू हैं। क्या कोई लड़का चौबीस पच्चीस साल तक अपना ब्रह्मचर्य रखता है ? अगर शास्त्रों के अनुसार नहीं चलते तो हिन्दू और ब्राह्मण काहे को कहलाते हो। तुम हिन्दू नहीं मक्कार हो। अगर अपने आपको हिन्दू कहते हैं तो धोखेबाज हो। दूसरी बात शास्त्र कहते हैं कि बच्चे पैदा करने के बाद वानप्रस्त में रहो। तुम्हारी स्त्री रहे लेकिन तुम उसे स्त्री न समझो। मुझे बताओ तो सही कि आजकल कौन रहता है ? तुम्हारे चार-चार पांच-पाँच बच्चे हैं, वृद्ध होगये हो, फिर भी तुम्हारी हवस नहीं जाती। पिछली आयु में संन्यासी हो जाओ। सब का त्याग कर दो। क्या करो ? तुम एक जगह तीन दिन से अधिक नहीं ठहर सकते। क्यों ? ताकि कहीं तुम्हारा मोह न हो जाये। जो सिद्धान्त सनातन धर्म का है वही विज्ञान का है, वही बाबा सालनसिंह और वही राधास्वामीमत के चलाने वाले का है। अगर पार जाना है तो जब तक तुम ये काम नहीं करोगे तुम्हारी मुक्ति नहीं हो सकती चाहे तुम लाख राम राम जपो, लाख मन्दिर डेरे बना दो।

इससे तुम प्रकाश में जा सकते हो मगर अपने घर फिर भी नहीं जा सकते। क्यों ? तुम रोशनी का साधन करते हो तो अन्तर से प्रकाश हो निकलेगा। प्रकाश में वजन है। कैसे ! मैं आटे की चक्की पर काम करता था। मैं वहां पर मैनेजर रहा हूँ। अगर गर्म गर्म आटे को तोल कर रखो तो दूसरे दिन आध पाव या तीन छटांक आटा घट जाता है। क्यों ? क्योंकि उसमें जो गर्मी होती है वह समाप्त हो जाती है ती उसका भार घट जाता है इससे मुझे विश्वास होगया कि प्रकाश में भी वजन है और विज्ञान ने भी सिद्ध किया है कि रोशनी का वजन होता है जो आदमी मरते समय ज्योति स्वरूप के दर्शन करते हुए मरते हैं वे भी ब्रह्म प्रकाश के देश से आगे नहीं

जा सकते। उस देश में नहीं पहुँच सकते जहां से हम आये हैं।

शास्त्र दो प्रकार की मुक्ति ऐसी है कि कुछ दिन रहने के बाद फिर चोला मिलता है और एक मुक्ति पाने से प्राणी सदा के लिये निकल जाता है। सन्तों का मार्ग सदा के लिए निकलने का है। ओ शास्त्र कहते है वही सन्त कहते हैं, केवल समझने व समझानेवाले नहीं हैं एक मुक्ति प्रकाश में जाने से मिलती है और एक प्रकाश से परे अपने घर जाने से मिलती है। जो प्रकाश से आगे गया वह अपने घर चला गया।

राधास्वामी मत ने ब्रह्म को काल कहा है, और वेदान्तियों को काल मत में रखा है। वे कहते हैं कि वेदान्ती भी नहीं पहुंचे। वेदान्ती कौन हैं? जो प्रकाश में रहता है वह वेदान्ती है। मुझे विश्वास होगया कि जो स्थूल रूप अन्तर से निकलेगा उसे जमीन की कशिश नहीं खींचेगी, यह ठीक है मगर वे प्रकाश या प्रकाश से आगे नहीं जा सकते। प्रकाश से परे आकाश है। आकाश का तत्व शब्द है। उसका आधार हमारी जात है अहाँ हमने जाना है। सन्तों ने खोज की और कहा ऐ बन्दे। अपने अन्तर सार शब्द को पकड़। हमारे अन्तर बहुत शब्द होते हैं। हमारे अन्तर सार शब्द कौन है? यह प्रकाश से परे है जिसे कोई सतनाम, कोई राधास्वामी और कोई निज नाम कहता है। जब तक हम उसे नहीं पकड़ेंगे तब तक हम अपने घर नहीं जा सकते। मैं उसका प्रमाण तुम्हें बताता हूँ—

चार खान चौड़ जग रची—अन्ड जेर सेदज उदभिजी।
माया ब्रज पुरुष पिर किरतो, मन इच्छा खेलें शिव शक्ति।
सुरत नर्दता में बहु पची, धूम खेल की अति कर मयी।
तीन गुनन का पासा लीन्हा, रजगुण, तमगुण, सतगुन चीन्हा।
कर्म हाथ से पासे डारे, भोग अंक ता में विस्तारे।
भूंठी बाजी जानो सच्ची, कोई पक्की कोई मारे कच्ची।

ब्रह्म क्या है? प्रकाश है। माया क्या है? जब प्रकाशरूपी आत्मा

प्रकृति के शरीर में आता है तो जिस प्रकार की प्रकृति से उसका शरीर बना हुआ है उस प्रकार के बोधभान और विचार उसके अन्तर पैदा होते हैं । यह माया है। ब्रह्म कौन है ? हमारे अन्तर प्रकाश है। वह बढ़ता और सोचता है। जब वह प्रकाश शरीर में आता है तो मन चित्त, बुद्ध अहंकार पैदा हो जाता है। ज्यों-ज्यों यह प्रकाश खून के दौरे से मस्तिष्क में आता है बुद्धि पैदा होती है। बच्चे के खून का दौरा इतना नहीं होता। अगर बच्चे का आपरेशन करना होता है तो क्लोरोफार्म नहीं देते। जैसे-जैसे खून का दौरा होता है वह बढ़ता रहता है।

सुरत क्या है ? सुरत हमारे अन्तर वह चीज है जिसका पता मुझे तुम लोगों से लगा। आपसे पता लगा कि न मैं शरीर न मन, न प्रकाश और न शब्द हूँ। मैं वह चीज हूँ जो अपने अन्तर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह सुरत है जब वह शरीर से निकल कर अपने आप में अकेली हो जाती है तो उसे कहते हैं कि सुरत निरत करती है। वह मालिक की जात है। वह यहाँ फँसी हुई है। तो मरने से पहले सारे संसार के मोह को दूर करो। न फकीरचन्द याद आये और न कोई और गुरु याद आये। मैं जो कुछ कहता हूँ ठीक कहता हूँ। कबीर साहिब सन्तों के शिरोमणि हुये हैं। वह कह गए—

गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नहिं।
कहैं कबीर ता दास को तीन ताप भरमाईं ॥

जो आदमी गुरु को फकीरचन्द या कोई और आदमी समझेगा वह कबीर अनुसार पार नहीं जा सकता। वह अन्धा और अज्ञानी है। क्या होगा ? दुखी, होगा जिन लोगों ने गुरू धारण किया हुआ है वे दुखी हैं। उन्हों ने गुरु के रूप को नहीं समझा कोई कहता है कि मेरा गुरु बाबा फकीर या कोई और। गुरु नाम समझ विवेक और ज्ञान का है। हाँ ! फकीरचन्द की जात से तुम्हें सच्चे गुरु का

पता मिलेगा। इसलिये बाहर का भाव है क्योंकि वह तुम्हें सच्चे गुरु का पता देता है। मैं तुम्हें धोखा नहीं देता रहा हूँ न किसी के विरुद्ध बोल रहा हूँ। मेरे जिम्मे कर्तव्य है। मैं वही शिक्षा दे रहा हूँ जो कबीर साहिब देगये। उन्होंने इशारों में कहा, मैं साफ कह रहा हूँ। इतना ही अन्तर है और कोई अन्तर नहीं।

जब प्रकाश हमारे शरीर में आता है तो हमारा जीवन पैदा हो जाता है और स्थूल शरीर में आता है तो सृष्टि पैदा हो जाती है यह ब्रह्म और माया खेलती है।

तीन गुनन का पासा लीन्ह।
रजगुन तमगुन सतगुन चीन्हा

यह माया है। सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण क्या हैं? हमारे मन के वायुमण्डल हैं जो प्रकाश से विचार निकलते हैं उन्हें तीन भागों में बाँटा गया है। एक रजोगुण, दूसरे तमोगुण और तीसरे सतोगुण

कर्म हाथ से पासे डारे, भोग अंक ता में विस्तारे
झूठी बाजी जानी सच्ची, कोई पक्की कोई मारे कच्ची

वो कहते हैं तुम्हारे मन की वाजी झूठी है। जैसे जो गोट पक जाती है तो सारा सफर समाप्त हो जाता है। मगर जब खिलाड़ी को आवश्यकता होती है तो उसी गोट को बीच में से निकाल कर चौपड़ में ले आते हैं। ऐसे ही जो प्रकाश में जाते हैं उन्हें वहाँ रहना पड़ेगा मगर जब ब्रह्मलोक में ब्रह्म को आवश्यकता होगी तो उन्हें निकाल कर फिर काम लेलेगा। वे फिर संसार में आयेंगे जैसे राम ब्रह्म के अवतार, कृष्ण आये और उनके साथ गोप और गोपियाँ आईं। इसलिये सन्तों के मार्ग में स्थाई मोज के लिये प्रकाश का साधन केवल रास्ते का साधन है। यह सन्तों की खोज Research है। वे वहाँ पहुंचे या कि नही इसका मुझे पता नहीं। मेरा क्या परिणाम होगा मुझे पता नहीं। मैं स्वयं डरता हूं।

'नथ खसम दे दृष्टा'

मगर अपना यत्न करना चाहिए। मैं बड़ा यत्न करता रहता हूं। मैं यह काम करता हूं। मुझे गुरु बनाने की हवस नहीं थी मैं तो समझना चाहता था कि यह संतमत क्या बला है। मैं सनातनी था जब कभी राधास्वामीमत की वाणी पढ़ा करता था, उन्होंने ब्रह्म को काल कहा है तो मैं दुखी हुआ करता था। मैं देखना चाहता था कि इन सन्तमतवालों के पास क्या हक है कि इन्होंने ब्रह्म को भी काल कह दिया। अब मुझे विश्वास होगया कि ब्रह्म प्रकाश है। जब तक कोई आदमी प्रकाश के परे नहीं जायेगा वह अपने आद घर नहीं पहुंच सकता दूसरे शब्दों में जो कुछ वह बना हुआ है और अपनो अस्तित्व हस्ती रखता है (अंशपना है) वह अपने घर नहीं जासकता जब तक अंश कुल नहीं हो जायेगा हमारा यह चक्कर समाप्त नहीं होगा मैं पाराशर गौत्र का हूँ और पाराशर ऋषी का खून हूँ। इन्होंने कहा है पाराशर भी भूल गया, वशिष्ट भी भूल गया। अपने पूर्वजों की कौन बदनामी सुन सकता है। मगर जिस आधार पर उन्होंने खण्डन किया है उसकी समझ आगई।

चारखाम की चौपड़ यह है। जब तक तुम ब्रह्म अर्थात प्रकाश से नहीं निकलोगे तुम्हारा यह झगड़ा समाप्त नहीं होगा।

नर्द सुरत चौरासी घर में
भरमत फिरे दुख और सुख में।
हारे ब्रह्म और जीती माया।
जीव नर्द बहुविधि दुख पाया।

वह कहते हैं ब्रह्म हारता है और सदा माया जीतती है। काश ! वे सन्त होते तो उनसे पूछता कि तुमने ऐसी वाणी बनाई कि संसार को पागल बना दिया। साफ बात क्यों न कही ? माया कैसे जीती है ? माया संकल्प या विचार है। जब आदमी मरता है तो कोई ही आदमी होता है जिसके अन्तर प्रकाश आता है परन्तु सभी के अन्तर

देवी आगई, किसी के अन्तर बाबा फकीर आगया, कोई कहता है राम आगया। यह सारे का सारा खेल माया है। कभी-कभी ब्रह्म की जीत होती है अर्थात किसी-किसी आदमी को अन्त समय पर प्रकाश आता है।

कभि कभि ब्रह्म जीत जो होई।
नर्द लाल होय ब्रह्म घर सोई।

अर्थात जब कभी-कभी प्रकाश आया तो वह प्रकाशमय होगई, ब्रह्ममय होगई और ब्रह्म देश में पहुंच गई मगर अपने घर नहीं गई। चौपड़ से बाहर नहीं हुई। प्रकाश का साधन करने वाला भी अपने घर नहीं जा सकता। वह ब्रह्ममय हो जायेगा। वहां आनन्द लेगा मगर जब कभी रचना के सिलसिले में आवश्यकता हुई तो वह आसकता है। जिस समय भी खिलाड़ी की इच्छा होगी। हमारा झगड़ा सदा के लिए समाप्त नहीं हो सकता। यही भृगुसंहिता कहती है कि जीव सौ सौ वर्ष शिवलोक में रहने के बाद फिर मृत्युलोक में आजाता है। इस वास्ते सन्तों के मार्ग में शब्द योग बताया है —

चौपड़ से बाहर नहीं होई।
निज घर अपना पाये न कोई।
माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई।
खेले इन नरदन से सोई।
भरम नर्द पिटे और काटे।
दुख उनका कोई नहीं सुने।

उसके घर में यह माया है। आप देखते हैं कि जब खिलाड़ी उप मारते हैं ऐसे ही हमारा जन्म मरन होता रहता है। उनकी कोई नहीं सुनता कि वे इससे कैसे बचें। मैं तो यह कहूँगा कि संसार इससे बचने के लिए नहीं आता। मेरे पास कितने आदमी बचने के लिए आते हैं? ये तो संसारी झगड़ों से बचने के लिये आते हैं। कोई कहता है धन नहीं है कोई कहता है यह होगया वह होगया।

सभी नर्द पछतावें टम टम
कैसे छूटें इनसे अब हम
करें फर्याद और दाद नहिं पावें
सेवें झीखें और चिल्लावें।

तुम लाख प्रार्थना करलो तुम्हें Gravity नहीं जाने देगी। तुम्हारी लाख प्रार्थना की हुई काम नहीं देगी।

वार बार भरमें चौरासी
कोई न काटे उनकी फाँसी।
श्रुति सिमृत और वेद पुराना।
सब ही मारें इनकी जान।

अब तुम सोचो एक ब्रह्मण यह वाणी कैसे पढ़े। मुझे ये बाणियाँ पढ़ कर बड़ा दुख हुआ करता था लेकिन दाता से मेरा विश्वास नहीं टूटता था और ये बातें मेरी समझ में नहीं आती थीं। उस समय मैंने अपना अनुभव कहने का प्रण किया था। मैं देखना चाहता था कि स्वामीजी के पास क्या हक था। अब मैं कहता हूं कि यह हक था जो मैं बता रहा हूँ कि प्रकाश का साधन करने वाला, दूसरे लाख वेद पढ़ने वाला, गीता, ग्रन्थ साहिब या भागवत पढ़ने वाला अगर यह चाहे कि वह चौरासी से बचजाये तो नहीं बच सकता। क्योंकि जब वह मरेगा उसका सूक्ष्म देह भारी होगा। भारी होने के कारण जमीन की Gravity उसे नीचे खींचेगी। अब आप लोगों की इच्छा है कि वे अमल करे या न करे, पार जाना चाहें या न चाहें। क्या मैं इसका ठेकेदार हूँ? मेरा कर्तव्य था मैं उसे पूरा कर चला। तुम्हारे विश्वास से तुम्हारा काम हो जाता है Credit मुझे मिल जाता है।

माया काल बिछाया जाल, अपने स्वार्थ करें।
अपने स्वार्थ करें बेहाल—कोई गोट न जावे घर को।
यहाँ ही खेल खिलावें सबको, सत्त पुरुष देख। यह हाल।

काल हुआ जीवन का काल, अपने स्वाद जीव भरमावें।
पता हमारा काहु न बतावें।

काल भगवान ने अपने स्वाद के लिए हमारे रूप को पैदा किया है। आप अपने स्वाद के लिये बच्चे पैदा करते हो। क्या मैं वरी हूं? हम जालम नहीं तो कौन हैं। हम बच्चे पैदा करते हैं लेकिन यह पता नहीं कि वे किस-किसी बीमारी से मरेगा। यह संसार क्या है? मेरे पास हर रोज दुख भरे पत्र आते हैं। इस दुख से छुड़ाने के लिये सन्तों ने यह युक्ति निकाली।

पुरुष दयाल दया उमगी,
सन्त रूप धर जग में आई, नर्दन को बहु विद्या समझाया।
काल निर्दई तुमको खाया, अब मैं कहूं करो तुम सोई।
जाल जाल कर न्यारे होई, सतगुरु संग बांध जुग चलो।
चोट न खाव काल वल दलो, यह घट काल बसाया प्रान।
तुमको लाया हम से मांग—

दोहा

यह तो घर है काल का, घर अपना मत जान।
निश्चय करके मानियो, जो अब करूँ बखान।

आज कबीर साहिब का शब्द निकला था—

चलना है दूर मुसाफिर काहे सोवैरे।
चेत अचेत नर सोय बाबरे, बहुत नींद मत सोवैरे।
काम, क्रोध, मद, लोभ में फँसे हो, हो हुसियार उमरिकहा खोवैरे
सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवैरे।
सो गठरी तेरी बीच में छिन गई, मूढ़ पकरि कहा रोवैरे।
रस्ता तो वह दूर विकट है, तजि चलन अकेला होवैरे।

कहाँ जाना है? हमारा घर वह है जो अकह, अपार, अगाध अनामी और रूप रंग से न्यारा है। पता नहीं हम कव से चले हुए हैं। हमारी Self की किरण वहाँ से आई है। जो दुखी होते हैं और

दुखों से बचना चाहते हैं उनके लिए संगठन है। संसार के लिए केवल 'शिवसंकल्प अस्तु है। जब दुख का अनुभव हो जायेगा सं-त मत की ओर जाना। संतमत सारे संसार के लिए नहीं है। जो यह कहते है कि अन्त समय पर गुरु साथ रहता है तो वहां नहीं पहुंच सकते। क्योंकि गुरु तुम्हारे साथ है तुम दो हो। बाहर का तो कोई गुरु नहीं है वह तुम्हारा अपना ही मन है। यही बात दाता दयाल ने कही थी कि भेद देने वाले सत्संगियों के रूप में मिल जायेंगे। आप लोगों के कारण मैं अपने घर जाने का यत्न करता रहता हूँ। मेरा मार्ग अब शर्णागतम् है।

नदिया गहरी नाव पुरानी, केहि विधि पार तू होवैरे।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, ब्याज के धोखे मूल खोवैरे।

नोट—सन्तों ने अपनी बाणी में कहा है कि प्रलय भँवरगुफा तक होती है। सतलोक में प्रलय नहीं जाती। सतलोक के दर्जे अलख, अगम और अनामी बताये हैं। उनके पास यह कहने का क्या हक है कि सतलोक के परे प्रलय नहीं होती। क्योंकि मैं लाख कोशिश करने पर भी उस चीज को जो मेरे अन्तर रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है अलग नहीं कर सकता। मैं कोशिश करता हूं और उस अरंग, अरूप और अनाम का अनुभव होता है मगर मैं सदा के लिए वहाँ नहीं ठहर सकता। शायद सन्त कबीर या स्वामीजी को भी यही दशा होती हो तब उन्होंने कह दिया कि सतलोक से आगे प्रलय नहीं होती। मगर अपना अपना विचार है। सन्तो ने जो कुछ कहा है इसका किसी को पता नहीं। उन्होंने अपने निजी अनुभव के आधार पर कह दिया कि नहीं होती है। मैं यह मानता हूँ मेरी Research इनसे अलग हैं। यद्यपि दाता दयाल ने अवश्य कहा है कि आदि में चुप और अन्त में चुप और कबीर साहिब ने कह दिया—

जहां पुरुष तहवाँ कछु तहीं कहे कबीर हम जाना ।
हमरी सेवा जो कोई, बूझे पावे पद निर्वाना ।

मेरा अपना अनुभव है कि हमारे अन्तर जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह गति के कारण अर्थात कारण प्रकृति से परे जो तत्व है जब उसमें गति होती है तो शब्द प्रकट होता है। शब्द के प्रकट होने के कारण जो उस शब्द में गति का चेतनता का भान होता है उसका नाम सुरत है। वह हम हैं। अगर कोई सन्त वहाँ पहुंच कर कुछ कर सकता होता तो मैं मान लेता कि उसमें कुछ शक्ति है मगर बड़े बड़े सन्त आदमी बीमारी तथा सम्बन्धियों की दशा को न बदल सके। इसलिये मेरा अनुभव यह है कि मैं कौन हूं ? Revolution के क्रम में यह सुरत पैदा होती है। कहां ? कारण प्रकृति के परे जो बल है उसमें गति होने के कारण और उसी में लै हो जाती है मैं कौन हूं ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। शेष जो संसार में हो रहा है यह सब प्राकृतिक खेल है। इस अनुभव के अतिरिक्त किसी भी सन्त या महापुरुष को और कुछ नहीं मिला। यह मेरे इक्यानवे साल के अनुभव का परिणाम है। इसलिये मुझे सन्त या असन्त बनने या कुछ बनने का प्राकृतिक जो प्रकृत खेल के क्रम में भी महसूस करता था वह समाप्त होगया। सब अहंकार टूट गये।

इस अवस्था में रहने वाले आदमी को विदेहयुक्त कहते हैं। एक जीवन मुक्ति और एक विदेहमुक्ति होती है। सब में रहने वाला जो त्रिलोकी अर्थात शरीर मन और रूह ये तीनों में नहीं फँसता मगर इसमें रहता है उसे जीवनमुक्त कहते हैं और जो उससे आगे चला जाता है वह अपने आपको चेतन के बुलबुले के रूप में अनुभव करता है। जो सब खेलों और चक्करों में रहता हुआ उनमें फँसता नहीं उसका नाम विदेह मुक्त है। इस समय तक मेरी Research यहाँ तक पहुंची है। आगे क्या होगा पता नहीं।

सार शब्द चौथे पद में होता है उसे सन्त नाम बताते हैं शब्द तो हर जगह होता है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण प्रकृति में भी शब्द होगा मगर सन्तों का नाम स्वामी जी के अनुसार यह है—

नाम रहे चौथे पद माहीं, ये ढूढ़े त्रिलोकी माहीं।

चौथे पद का शब्द हमें पार करेगा। जो वाकी घन्टा संख, ओंकार, रारंकार, सोहंकार शब्द है वे तुम्हें जन्म मरन से नही वचा सकेंगे यद्यपि अच्छे देश में अच्छी योनियें मिलेंगे। वहाँ पहुँच जाओगे। स्वामीजी ने लिखा है—

कछु काल अमीरस भोगा।
फिर मुडके तन में वन्धाना॥

सन्तों का मार्ग वहुत ऊँचा है। इनकी खोज बहुत ऊँची High है और शास्त्रों से भी मैंने सिद्ध कर दिया। सनातन और सन्तमत में कोई अन्तर नहीं है।

राधास्वामी

प्रार्थना

घट का घर सूना पड़ा है, इसमें आप आजाइये।
दास हूँ सेवक हूँ सच्चा, अव तो आप अपनाइये॥
काम का मद-मोह का, माया का कूड़ा हट गया।
शुद्ध निर्मले और सुथरी, कोठरी में आइये॥
घट का घर मेरा बने, मन्दिर सुहाना अद्भुती।
मूरती आकर विराजे, अपनी छबि दिखलाइये॥
मैं तुम्हारा तुम हो मेरे, यह समझ में आगया।
भ्रम और अज्ञान माया, मोह को मिटवाइये॥
आरती साजूँ जलाऊँ, ज्योति भक्ति-प्रेम की।
राधास्वामी नाद घंटा, शंख मैं सुनवाइये॥

योगी से—

(गताँक से आगे)

रहना चाहिये ताकि उधर की चलने की राह में रुकावट और विघ्न पैदा हो तो वे दूर कराते चलें गुरू जब अपने शिष्य को किसी मंत्र का उपदेश देते हैं और जब शिष्य उस मंत्र को जान लेता है तब वह शिक्षा का अधिकारी होता है और इसको इस प्रकार समझो. कि किसी दुकानदार का लड़का लाखों रुपयों का हिसाब किताब सीखता है और सैकड़ों मन अनाज वगैरा का भाव सीखता है और उसमें वह इतना अधिकार प्राप्त कर लेता है कि किसी भाव का कितनी तोल में चीजों का मूल्य शीघ्र ही निकल कर रख लेता है परन्तु जब वह अपने पिता के पास दुकान पर जाता है और पिता उसका उससे कहता है कि बेटा पाँच पैसा का गुड़ ८) सेर के भाव से तोल दे तो वह लड़का बड़े झंझट में पड़ जाता है और उँगलियो पर हिसाब लगाने लगता है परन्तु ग्राहक जल्दी मचाता है तब उसका पिता कहता है कि तुम पढ़ तो लिये पर गुने नहीं इसी प्रकार जो शिष्य दीक्षा लेकर गुरू से अलग हो जाता है वह शिक्षा नहीं लेसका और वह उस मंत्र की सिद्धी नहीं कर सकता।

मैं जब स्कूल में पढ़ता था और मेरे बाबा आढ़त की दुकान करते थे तो एक दिन काम ज्यादा होने के कारण मुझसे कहा कि तुम यह बहीं ले जाओ और बाजार से उघाई कर लाओ। जिसके नाम जितनी रकम लिखी हुई है उतनी शुमार करके और परख कर ले आओ। इसलिये मैं बाजार जाकर सब दुकानदारों से रुपया वसूल कर लाया, और थैली और बही को लाकर उनके आगे रख दिया। उन्होंने कहा कि इसका जोड़ लगाओ कि कितने रुपये हुए। मैंने जोड़ लगा कर उनको बतला दिया। थैली के रुपयों की शुमार करो, जब शुमार की गई तो जितना जोड़ बही में था, थैली में उतना रुपया न निकला। इसलिये दो तीन बार जोड़ लगाने पर गलती निकल गई

और दोनों जोड़ एक मिल गये। अब मैं समझा कि इसी को शिक्षा कहते हैं।

इसी प्रकार शिष्य जब गुरू से योग साधन की दीक्षा लेकर गुरू की सतसंगत में रह कर अभ्यास करता है तो गुरू रोज-रोज का शिष्य से उसके अभ्यास का हिसाब किताब लेते रहते हैं। जहाँ कहीं भूल चूक होती है उसे सही करते रहते हैं। शिष्य बहुत जल्दी उन की सेवा करता हुआ अपनी आत्मिक उन्नति कर लेता है और इस प्रकार वह थोड़े दिनों में ही अपना काम बना लेता है। इसे इस प्रकार समझो।

जब महाराज रामचन्द्रजी ने गुरू वशिष्ठ जी से दीक्षा लेली तो उसका कुछ फल न हुआ परन्तु जब विश्वामित्र जी महाराज के पास उनके आश्रम में रहे तो उन्होंने उसी अभ्यास को अपने सामने करा कर और अनेक प्रकार से शिक्षा देकर थोड़े ही दिनों में इस लायक कर दिया कि विश्वामित्रजी के साथ जनकपुर में सिया स्वयंवर में जाकर शिवजी का धनुष तोड़ दिया।

गुरू

मनुष्य शरीर में मालिक कुल जब आया हुआ होता है उसे गुरू कहते हैं। गुरू आदर्श और इष्ट ऊँचे से ऊँचा और सबसे बड़ा है जिसकी महिमा कोई नहीं कह सकता। वही परम तत्व है।

गुरू कीजिये जान, पानी पीजिये छान।

जब तक यह मालूम न हो कि हमें गुरू क्यों करना चाहिये, न तो गुरू की तलाश की जाय और न गुरू किया जाय।

प्रश्न—गुरू क्यों करना चाहिये।

उत्तर-- गुरू उसी मनुष्य का करना चाहिये जिसके मन में जानने की या अपने आत्मोन्नती की इच्छा हो या मन की मलीनता अर्थात मन का मैल धोने की इच्छा होय या मन में शान्ती लाने की इच्छा हो। इसको इस प्रका भी कह सकते हो कि जिसको अपनी

आत्मा गिरती हुई मालूम हो और मन मलीन रहता हो और मन में अशान्ती रहती हो उसको गुरू करना चाहिये।

प्रश्न—आत्मा का गिरना किसे कहते हैं ?

उत्तर—साधू सन्त महात्माओं में रुचि का न होना, न इनमें भक्ती और सेवा का भाव होना, प्रत्येक जीव जन्तु में बुराई का देखना और उनसे घृणा करना और काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष की बहुतागत होना आत्मा की गिरावट समझी जाती है।

प्रश्न—मन मलीन कैसे हो जाता है ?

उत्तर—तामसी भोजन करना, कड़वे बचन कहना, नीच काम करना और नीच पेशों की कमाई से शरीर का पालन करना मन मलीनता कहलाती है।

भोजन तीन प्रकार के होते हैं—तामसी, राजसी, सात्वकी

गर्म मसाला, बासी खाना, उड़द, बाजरा, चना, मटर, लहसन, प्याज, अरबी, खट्टा दही, नशा करने वाली चीजें, माँस, मदरा, इत्यादि जो आलस्य और नींद ज्यादा लाती हों वह तामसी भोजन कहलाते हैं।

गेंहूँ, अरहर, मसूर, घी, गाजर, शकरकन्द इत्यादि यह राजसी भोजन कहलाते हैं और चावल, मूंग, कूट, सिंघाड़ा, केला व कन्द मूलफूल, इत्यादि हल्की और शीघ्र पचजाने वाली वस्तु सात्विक भोजन कहलाते हैं।

ताना देना या जान पूछ कर ऐसी बात कहना जिससे सुनने वाले के दिल को दुख पहुंचे इसे कड़वे बचन कहते हैं।

और चोरी, जूआ, चुगली, झूट बोलना इत्यादि इत्यादि नीच कर्म कहलाते हैं।

और हड्डी, चमड़ा, माँस, मदिरा का व्यापार करना नीच पेशे कहलाते हैं।

दुखों से अथवा संसारी कार्यों के बिगड़ने से अथवा अधिक दिनों

कलह रहने के कारण मन में अशान्ती रहती और इनसे छुटकारा चाहता हो वही मनुष्य गुरू बनाने का अधिकारी है वही जान सकता है कि मुझे बिन गुरू के आत्मिक, मानसिक, और शारीरक शान्ती नहीं मिल सकती है।

जो मनुष्य गुरू बनाने के लिये जांच या पहिचान के लिये गुरू का इम्तहान लेना चाहते हैं वह तो गुरू करने का नाम भी न लें। जब तक उनमें यह इच्छा बनी रहेगी वह आत्मिक ज्ञान के अधिकारी नहीं हो सकते। अपने इष्ट की जांच और नाप, तोल अब तक किसी ने नहीं की। अगर वह आदर्श जांच, नाप, तोल, में आजांय तो वह इष्ट आदर्श नहीं है। उनको कुछ और कहो क्योंकि, ब्रह्म जाना त ब्राह्मण: अर्थात जो ब्रह्म को जान जाता है वह ब्रह्म ही हो जाता है। ऐसे ही जो गुरू को जान जाता है वह गुरू ही हो जाता है। इसलिये जिसने गुरू को जानने और पहिचान ने की इच्छा की वह शिष्य कैसे हो सकता है। इन बातों को भलो भाँति जानना चाहिये। कि हमको गुरू करने की आवश्यकता भी है या नहीं। बस इतना ही बहुत है।

आसन, भोजन, भाव

पहले शिष्य को आसन सिद्धि कर लेना चाहिये। वह ऐसा सिद्ध होजाय कि घन्टे दो घन्टे तक एक ही आसन पर बैठा रहे। बार-बार पहलू न बदलना पड़े। नहीं तो एकाग्र चित्त होने में बिघ्न पैदा होगा मन एकाग्र न हो सकेगा कोई ऐसा आसन अपने मन के लायक छाँट लेना चाहिये जिस पर घन्टे दो घन्टे तक सहज रीति से बैठा जा सके। आसन सिद्ध होजाने के पश्चात इस शरीर का साधन करना चाहिये अर्थात इन्द्रियों की और वस्तु की तरफ सुरति बिल्कुल न जाय, और शरीर की सुधि बुधि न हो। इसी को आसन की दृढ़ता कहते हैं और योगाभ्यास समय सतसंगी भाइयों को सात्विक

और बहु भोजन अभ्यास के समय नींद, आलस्य, शरीर का टूटना, जँभाई इत्यादि विघ्न पैदा कर देते हैं। मैंने देखा है जो सतसंगी भाई आसन और भोजन के बारे में बद परहेजी करते हैं वही भाई शब्द के न होने और मन के अभ्यास में न लगने की शिकायत करते हैं। यदि ऊपर की लिखी बातों पर चला करेंगे तो फिर कोई कारण नहीं कि उनका शब्द न खुले और मन एकाग्रचित्त होकर अभ्यास में न लगे। ऐसा हो नहीं सकता कि शब्द न हो। शब्द का होना स्वाभाविक क्रिया है और इसी कारण से इसको सहज योग कहते हैं। यदि अभ्यासी विश्वास और भाव गुरू के चरणों में रख कर इस योग का साधन करे तो वह अपना इसी जन्म में काम बनालेगा। कहा भी है—

भावम् फलदायकम्, विश्वास फल दायकम्

भाव और विश्वास से ही इष्ट की प्राप्ती होती है। इसी का नाम सिद्धि शक्ति है इस सिद्धि शक्ती की जड़ सुमिरन में रहती है। इष्ट प्राप्ति की प्रबल इच्छा ही मन में इष्ट के खेंचने की शक्ती पैदा करती है, और अपना काम बना लेती है। यह स्वाभाविक नियम हैं।

छन्द—भावना पक्की हो मन में पक्का ही विश्वास हो।
क्यों न ऐसे जन की इस, रचना में पूरा आस हो॥
आस में विश्वास और विश्वास, जग की आस हो।
जिसमें यह विश्वास है, वह कैसे जग में निराश हो॥

और भी कहा है कि विश्वास के साथ गुरू के चरणों को छूकर यदि अभ्यास किया जाय तो कुछ दिन में ही अभ्यासी की आत्मिक उन्नति हो जाती है।

गुरु पद परस करो अभ्यास।
घट में देखो विमल उजास॥

और महर्षिजी महाराज का वचन हैं—

वे मदद मुर्शद के मत जा राह में।
सैकड़ों उसमें बला खतरात हैं ॥१॥
यह नसीहत सुनले दिल से मानले।
साथ कर मुरशद का उनसे ज्ञान ले ॥२॥
ज्ञान लेकर राह रूहानी में आ।
कर अमल हो कशफ असरारे खुदा ॥३॥

श्लोक—गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरुर्देव महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

राधास्वामी पंथ

राधास्वामी मत में तीन चीजें मुख्य हैं - सुमिरन, ध्यान, भजन। दीक्षित अभ्यासी को गुरू दीक्षा देते समय उन स्थानों का पता देते हैं जो उसके घट के अन्दर है। उनको करते हुए आगे को तरफ बढ़ते जाइये।

सुमरन

किसी चीज को बार बार याद करना और उसी को बार-बार सोचना सुमरन कहलाता है। राधास्वामी मत में नाम का सुमरन किया जाता है जिसको गुरू दीक्षा देते समय शिष्य को दान देते हैं। वह मालिक का मुख्य नाम है। यह वगैर होंठ और जीभ हिलाये सुरति की जबान से ही लिया जाता है। इसी को अजपा जाप कहते हैं और इसकी धुन आपही घट में हुआ करती है।

ध्यान

जिसकी याद घट में बार-बार की जाती है उसकी सूरत भी घट में आप ही आजाती है। वह सूरत गुरू या नाम की होती है। क्योंकि मैं पहले हो कह चुका हूँ कि मनुष्य शरीर में मालिक कुल आया हुआ है इसलिये नाम के साथ-साथ गुरू की शकल को भी

याद करना चाहिये। ऐसी याद करना चाहिये कि वह एक जगह दृढ़ता के साथ स्थित हो जावे। इसी को ध्यान मूलम गुरू मूर्ति कहते हैं। यही ध्यान करने का मूल अर्थात जड़ है। इसके तीन दर्जे हैं—धारणा, ध्यान, समाधी, चाहे किसी चीज को देखो अन्दर या बाहर, यही तीन दर्जे होंगे परन्तु यह अन्दर के ही लिये बोले जाते हैं।

धारणा कहते हैं सुरति की आँख से अपने घट में गुरू की मूर्ति को देखने में लग जाना। इस में भी तीन दर्जे हैं एक देखने वाला, दूसरा जिसको कि देखें, तीसरा जिससे देखें। परन्तु जब यही धारणा गहरी अवस्था को पहुंचती है तो दो ही रह जाते हैं एक देखने वाला दूसरा जिसको देखें। यह ध्यान की प्रथम अवस्था है। परन्तु अब अभ्यास करते करते ध्यान गहरी अवस्था को पहुंचता है तो उसमें ध्यान करने वाले और केवल जिसका ध्यान किया जाय वही रह जाता है और जब यह अवस्था ज्यादा देर तक ठहरने वाली हो तो यही समाधी कहलाती है।

समाधी में मनुष्य को अपने शरीर और मन को किंचित भी सुधि नहीं रहती और इसी को किसी वस्तु में लय होजाना कहते हैं। इसलिये इसी प्रकार गुरू की सूरत का ध्यान करना चाहिये, और यह नाम के साथ-साथ ही होते रहना चाहिये।

भजन

राधास्वामी मत में अनहद शब्द सुनने को भजन कहते हैं जिसकी व्याख्या विस्तार के साथ गुरू दीक्षा देते समय शिष्य को भली प्रकार समझा देते हैं। यह शब्द संसार की सभी वस्तुओं यहां तक कि सूरज, चाँद पृथ्वी में हो नहीं गूंजता रहता है बल्कि मन में आने वाली कोई चीज ऐसी नहीं है जिसमें स्वाभाविक शब्द न गूंज रहा हो। शब्द दो प्रकार का होता है—एक धुनात्मक, दूसरा वर्णात्मक। धुनात्मक शब्द को केवल सुना हुआ करती है। (क्रमशः)

पूज्य श्री परम दयाल जी महाराज की यात्रा का कार्यक्रम दशहरे का

ता०	रेल व हवाई जहाज के नम्बर	स्टेशन से	समय	वार
२८-९-७९	११ जे० एच० ३४ डाउन कश्मीर मेल	होशियारपुर	१९-४० पी० एम०	शुक्रवार
३-१०-७९	आई० सी० ४११ फलाइट	दिल्ली	६-४५ ए० एम०	बुधवार
५-१०-७९	४९ अप पूर्वांचल एक्सप्रेस	गोरखपुर	६ ए० एम०	शुक्रवार
५-१०-७९	सड़क से	बनारस	३-३० पी० एम०	शुक्रवार
७-१०-७९	सड़क से	राधास्वामी धाम	१७ पी० एम०	रविवार
९-१०-७९	सड़क से	खानपुर	७ एम० एम०	मंगलवार
१०-१०-७९	११ अप हावड़ा दिल्ली एक्सप्रेस	मुगल सराय	१३ पी० एम०	बुधवार
१२-१०-७९	२ एल सी डाउन फास्ट पेसेंजर	कानपुर	७-२० ए० एम०	शुक्रवार
१३-१०-७९	सड़क से	लखनऊ	८ ए० एम०	शनिवार
१४-१०-७९	सड़क से	सुल्तानपुर	१२ दोपहर	रविवार
१५-१०-७९	सड़क से	लखनऊ	८ ए० एम०	सोमवार
१७-१०-७९	सड़क से	सीतापुर	१६ पी० एम०	बुधवार
१८-१०-७९	५१ अप जम्भू तवी एक्सप्रेस	लखनऊ	८-३५ ए० एम०	गुरुवार
२१-१०-७९	सड़क से	सरसोंहेड़ी	६ ए० एम०	रविवार
२२-१०-७९	सड़क से	बनवारीपुर	१५ पी० एम०	सोमवार
२२-१०-७९	३३ अप मेल	दिल्ली	२०-५५ पी० एम०	सोमवार

पहुँच की तारीख	ट्रेन व फलाइट नं०	पहुँच	समय	वार
२९-९-७९	कश्मीर मेल	दिल्ली	५-५ ए० एम०	शनिवार
३-१०-७९	हवाई जहाज	गोरखपुर	७-४५ ए० एम०	बुधवार
५-१०-७९	४९ अप	बनारस	११-५० ए० एम०	शुक्रवार
५-१०-७९	सड़क से	राधास्वामी धाम	१७-३० पी० एम०	शुक्रवार
७-१०-७९	सड़क से	खानपुर	१९ पी० एम०	रविवार
९-१०-७९	सड़क से	बनारस	७ ए० एम०	मंगलवार
१०-१०-७९	हावड़ा दिल्ली एक्सप्रेस ११ अप	कानपुर	२० पी० एम०	बुधवार
१२-१०-७९	फास्टपेसेंजर २ एल० सी०	लखनऊ	९-४० ए० एम०	शुक्रवार
१३-१०-७९	सड़क से	सुल्तानपुर	१२ दोपहर	शनिवार
१५-१०-७९	सड़क से	लखनऊ	४ पी० एम०	रविवार
१५-१०-७९	सड़क से	सीतापुर	११ ए० एम०	सोमवार
१७-१०-७९	सड़क से	लखनऊ	१९ पी० एम०	बुधवार
१८-१०-७९	५१ अप	सहारनपुर	२०-१२ पी० एम०	गुरुवार
२१-१०-७९	सड़क से	बनवारीपुर	१० ए० एम०	शनिवार
२२-१०-७९	सड़क से	दिल्ली स्टेशन	२० पी० एम०	सोमवार
२३-१०-७९	३३ अप	होशियारपुर	६–२५ ए० एम०	मंगलवार

नोट—प्रोग्राम में आवश्यकतानुसार फेर बदल किया जा सकता है।

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८ सुधा मीतल

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 170

Chikwar Narsimhlu Book Seller

C/o Banswara

Nizamabad

A.P.

सम्पादक— श्रीमती सुधा मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक—

श्रीमती सुधा मीतल,

शिव भवन, लेखराज नगर

अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh